वन महोत्सव कार्यक्रम

चर्चा में क्यों?

हाल ही में छत्तीसगढ़ वन विभाग ने **मनेन्द्रगढ़-चिरिमिरी-भरतपुर (MCB)** ज़िले में मियावाकी पद्धति से पौधे लगाकर **वन महोत्सव कार्यक्रम** का आयोजन किया।

प्रमुख बिंदु

- पाँच अलग-अलग स्थानों पर करीब 6,000 पौधे रोपे गए। मियावाकी तकनीक अपनाने के पीछे **मुख्य उद्देश्य** नगरीय ऊष्मा द्वीपों **और** प्रदूषण **को कम** करना है।
- **मियावाकी विधि:**
    - इसका **नाम जापानी वनस्पतिशास्त्री अकीरा मियावाकी के नाम पर रखा** गया है, इस पद्धति में प्रत्येक वर्ग मीटर में **दो से चार विभिन्न प्रकार के देशी पेड़ लगाए जाते** हैं।
    - इस **पद्धति का विकास 1970 के दशक** में किया गया था, जिसका मूल उद्देश्य **भूमि के एक छोटे से टुकड़े में हरित आवरण को सघन** बनाना था।
    - इस पद्धति में **पेड़ आत्मनिर्भर हो जाते हैं और तीन वर्ष के भीतर अपनी पूरी लंबाई तक बढ़ जाते हैं।**
        - मियावाकी पद्धति में प्रयुक्त पौधे अधिकांशतः **आत्मनिर्भर होते हैं तथा उन्हें खाद और पानी जैसी नियमित देखभाल की आवश्यकता नहीं होती।**
    - **महत्त्व:**
        - **देसी पेड़ों का घना हरा आवरण उस क्षेत्र के धूल कणों को सोखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है** जहाँ उद्यान स्थापित किया गया है। पौधे **सतह के तापमान को नियंत्रित करने में भी सहायता** करते हैं।
            - इन वनों में प्रयुक्त होने वाले कुछ **सामान्य देसी पौधों में अंजन, अमला, बेल, अर्जुन और गूँज शामिल हैं।**
        - ये वन **नई जैवविविधता और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित करते हैं जिससे मृदा की उर्वरता बढ़ती है।**

//

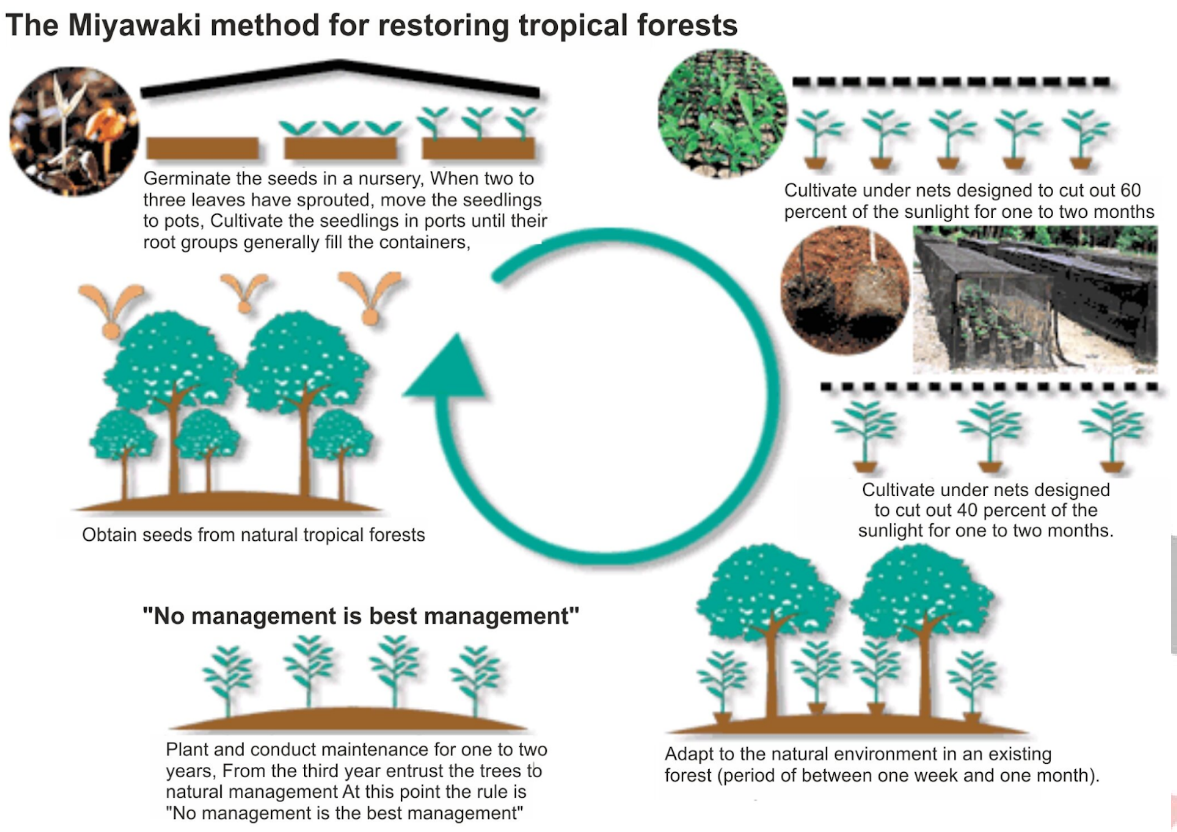

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/van-mahotsav-programme